पड़ोसी देशों की लोक



सज्जा : दिलीप चक्रवर्ती
PADOSI DESHON KI LOK-KATHAYEN
(Folk Tales),
by Vijay Ragav Reddi

मूल्य : छः रुपये (6.00)



राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

पड़ोसी देशों की लोककथाएं

विजयराघव रेड्डी



क्रम

□□□

ये लोककथाएं

मोरिशस से लेकर फिजी द्वीप समूह तक हिन्द महासागर और प्रशांत महासागर में दूर-दूर तक स्थित अनेक द्वीपों एवं दक्षिण पूर्व एशिया के दर्जनों देशों में कई वर्ष पहले भारतीय धर्म और संस्कृति का विपुल मात्रा में प्रचार हुआ था। इस विस्तृत भाग को ही इतिहासकारों ने बृहत्तर भारत की संज्ञा दी थी। कई वर्षों के बीत जाने पर भी उन देशों के जन-जीवन में, उनके आचार-विचार में, तिथि-त्योहारों में, धर्म दर्शन में, भाषा-साहित्य एवं नृत्य-नाटिकाओं में भारतीयता की छाप देखी जा सकती है। वहां के लोक-मानस के विश्वास उनके असंख्य लोक-नृत्यों, लोक-गीतों और लोककथाओं में बखूबी प्रकट हुए हैं, जो भारतीय लोक-मानस के विश्वासों से हर दृष्टि से मेल खाते हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि ये सारे देश न केवल भौगोलिक दृष्टि से हमारे पड़ोसी हैं, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी हमारे अति निकट हैं। यहां की लोककथाएं तो हमारी अपनी ही कथाएं लगती हैं।

ऐसी अनगिनत कथाओं में से आठ ऐसी बहु-प्रचलित कथाएं जो हमने कंबोडिया, जावा, थाईलैंड, न्यूगिनी, न्यूजीलैंड, बर्मा, माडागास्कर और सुमात्रा देशों से ली हैं, दूसरी बार हिन्दी में प्रस्तुत की जा रही हैं। आशा है कि ये लोककथाएं हिन्दी के बाल-जगत में लोकप्रिय होंगी।

—विजयराघव रेड्डी

विवेक की शक्ति

भारतीय धर्म, दर्शन तथा संस्कृति का प्रचार दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में बौद्ध धर्म के माध्यम से हुआ था। आज भी वहां के कई देशों का राष्ट्रीय धर्म बौद्ध धर्म है। उन देशों के निवासियों का आज भी विश्वास है कि बुद्ध भगवान संकट के समय पर अचानक प्रकट हो जाते हैं। लोगों को सदुपदेश देकर उनमें विवेक की शक्ति जागृत कर देते हैं और विपत्तियों से उनकी रक्षा करते हैं। संकट के समय बुद्ध का प्रकट होना, सदुपदेश देना और लोगों के विवेक की शक्ति को जगाना आदि घटनाओं से संबंधित कंबोडिया की ज्ञानवर्द्धक लोककथा है **'विवेक की शक्ति'**

कई वर्ष पहले की बात है। दो पड़ोसी देश कंबोडिया और लाओस आपस में युद्ध करने की तैयारी कर रहे थे। झगड़ा दोनों देशों में बहने वाली एक नदी को लेकर था। नदी का नाम था मी-काङ्ग़ जो लाओस से निकलकर कंबोडिया में बहती थी।

नदी दोनों देशों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण थी। साथ ही दोनों देशवासी उसे पूजते भी थे। नदी के पानी की सिंचाई से दोनों देशों के खेत हरे-भरे रहते थे। सर्वत्र हरियाली छाई रहती थी। दोनों देशों में खुशहाली थी। दोनों देश मी-काङ्ग को जीवन-दायिनी समझते थे। दोनों का उस पर दावा था।

इस मामले को लेकर स्थिति इतनी बिगड़ गई कि एक बार वे एक-दूसरे के देश पर हमला करने को तुल गए और अपनी-अपनी सेनाएं लेकर आमने-सामने खड़े हो गए।

अचानक बुद्ध भगवान वहां पहुंच गए। उन्होंने युद्ध के लिए तैयार देशों की विशाल सेनाएं देखीं। बुद्ध को इस प्रकार वहां अचानक देखकर दोनों की सेनाओं में खलबली मच गई।

बुद्ध ने दोनों देशों के राजाओं, मंत्रियों तथा अन्य अधिकारियों को अपने पास बुलाया। दोनों सेनाओं के बीच खड़े होकर वे ऊंची आवाज़ से प्रश्न करने लगे, "तुम लोग आपस में क्यों युद्ध करने जा रहे हो ?"

"हमारे जीवन की आधार मी-काङ्ग नदी के जल के लिए।" बुद्ध को जवाब मिला।

"नदी का जल और मानव का रक्त इन दोनों में से कौन मूल्यवान् तथा कारगर है ?" बुद्ध ने पुनः प्रश्न किया।

"मानव का रक्त नदी के जल से अधिक मूल्यवान् तथा कारगर है," एक स्वर में दोनों ओर से जवाब मिला।

"अगर ऐसा ही है तो तुम लोग कम मूल्यवान् जल के लिए महत्त्वपूर्ण और कारगर रक्त क्यों बहाना चाह रहे हो ? बुद्ध भगवान ने प्रश्न किया।

"इसलिए कि हमें जीने के लिए मी-काङ्ग नदी के जल की आवश्यकता है।" दोनों ओर से एक ही जवाब मिला।

"अगर तुम लोग जीना चाहते हो, तो मरने के लिए क्यों तैयार हो गए हो ?" बुद्ध ने फिर प्रश्न किया।

दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने जवाब दिया, "भगवान ! दोनों देशों की आपसी ईर्ष्या के कारण अब स्थिति इतनी बिगड़ गई है कि उसका हल केवल युद्ध से हो सकता है। इसके अलावा किसी और साधन से हल संभव नहीं है।"

बुद्ध ने प्रश्न किया, "अगर ईर्ष्या का जवाब ईर्ष्या से दिया जाए तो आखिर ईर्ष्या का अंत कहां होगा ?"

बुद्ध भगवान के इस प्रश्न से दोनों सेनाओं में शांति-सी छा गई और दोनों पक्षों के लोग सोच में पड़ गए कि क्या जवाब दिया जाए और आगे क्या किया जाए ?

बुद्ध के शांति-पथ के प्रश्नों का उन्हें कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था। अंत में बुद्ध भगवान के कथन के अनुसार उन दोनों देशों ने एक शांति सभा बनाई।

शांति सभा ने दोनों देशों के दावे को ध्यान से सुना। उसने दोनों देशों में जाकर असली स्थिति को अपनी आंखों से खुद देखा और समझा। खूब सोच-विचार करने के बाद अंत में उस सभा ने एक दिन ऐसा निर्णय दिया कि दोनों देश मान गए और उनमें युद्ध की आशंका टल गई। इसलिए कहते हैं कि विवेक एक ऐसी शक्ति होती है जिसके द्वारा मानव हिंसात्मक और सर्वनाशकारी युद्धों तक को रोक सकता है, और शांति के साथ जीवन बिता सकता है।



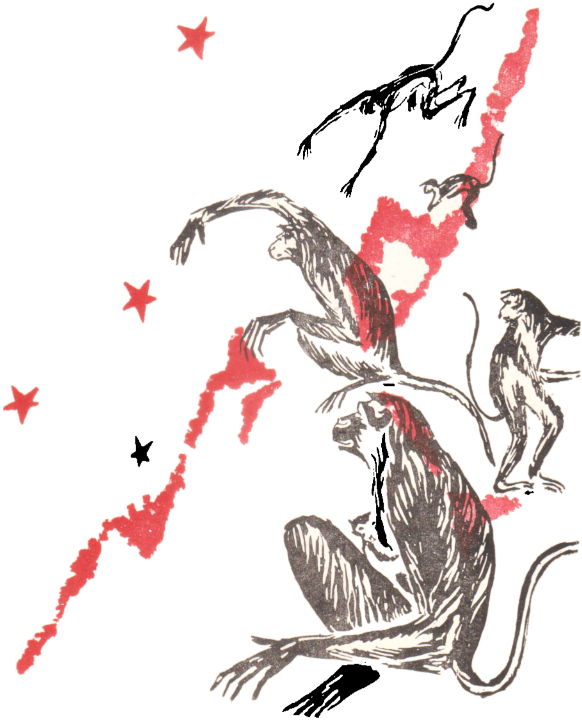
हनुमान पहाड़ कोराङ्ग

इन्डोनेशिया के अन्य द्वीपों की भांति जावा द्वीप में भी रामायण का अधिक प्रचार है। श्रीराम जी के साथ-साथ वहां के लोगों के लिए हनुमान जी भी श्रद्धा के पात्र हैं। इसी लिए हनुमान जी और उनकी वीरगाथाएं भी वहां के लोक-गीतों तथा लोक-कथाओं का हिस्सा बन गई हैं। जावा के लोग वहां के एक पहाड़ को 'हनुमान पहाड़' भी कहते हैं। हनुमान पहाड़, हनुमान जी, तथा उनकी वानर प्रजा से संबंधित जावा की एक लोककथा यहां दी जा रही है—**'हनुमान पहाड़ कोराङ्ग'**।

जावा के बंटम नामक राज्य के दक्षिण में एक ऊंची पर्वत श्रेणी है। इस पर्वत श्रेणी को कोराङ्ग कहते हैं। कोराङ्ग के पर्वतों में बदूवी जाति के जंगली लोग रहते हैं। जंगलों में खेती-बाड़ी तथा जंगली जानवरों का शिकार करके वे अपना पेट पाल लेते हैं। ये बड़े ईमानदार और हिम्मतवाले होते हैं।

कोराङ्ग पर्वत बंटम राज्य के उत्तर में सुमात्रा और जावा के बीच सुण्डा जल-संधि में स्थित है। बदूवी लोगों का विश्वास है कि एक ज़माने में कोरांङ्ग पर्वत इतना ऊंचा था कि उसकी चोटियां तारों को छूती थीं और इसका निर्माण वायु पुत्र हनुमान जी ने किया था। उनके अनुसार वानरों के राजा हनुमान जी पृथ्वी पर एक बार घूमते-घामते एक दिन अपनी प्रजा के पास पहुंच गए। वे अपने कंधों पर रेत की दो भारी बोरियां ले आए थे।

हनुमान जी अपनी प्रजा की मदद से सुण्डा जल-संधि में दो छोटे द्वीपों का निर्माण करना चाहते थे। वे वहां पहुंचते-पहुंचते बहुत थक गए थे, तिस पर उन्हें वहां यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ और क्रोध आया कि उनसे पहले ही किसी देवता ने वहां पहुंचकर सुण्डा जल-संधि में तीन छोटे-छोटे द्वीप—कर्कटू, बेशी, और द्वरासिनादेग बना दिए थे। गुस्से से वानरों के राजा हनुमान जी ने दोनों बोरियों को फाड़-फाड़ कर फेंक दिया तो रेत सागर की उत्तुंग लहरों में बह गया। लेकिन थोड़ी देर के बाद रेत फिर इकट्ठा हो गया और देखते-देखते ही वहां दो बड़े पहाड़ खड़े हो गए।



उन दोनों पहाड़ों में से एक को हनुमान जी ने कोराङ्ग नाम दिया ओर दूसरे को पूलोश्री। पूलोश्री ने जब साधारण पहाड़ का रूप धारण कर लिया तो उसका आगे बढ़ना रुक गया। लेकिन कोराङ्ग ऊपर की तरफ हनुमान जी की पूंछ की तरह बढ़ता ही गया और आखिर उसका शिखर आसमान को छूने लगा।

हनुमान जी की वानर प्रजा तब तक वहां खड़े-खड़े यह सारा तमाशा देखती रही। देखते-देखते जब कोराङ्ग पहाड़ आसमान को छू गया तो बंदर खुशी के मारे नाचने लगे और एक-एक करके उस पहाड़ पर चढ़ते गए। आखिर सारे बंदर उस पर पहुंच गए। बंदर यह समझने लगे कि उनके राजा ने उनके खेलने के लिए ही यह पहाड़ बनवाया है। खेलते-खेलते कुछ बंदर पहाड़ की चोटी पर पहुंच गए और वहां से आसमान के तारों को तंग करने लगे। जब तारे उनको देखकर डरने लगे तो बंदर उन्हें और चिढ़ाने व तंग करने लगे। वे निडर होकर छोटे तारों को मारने भी लगे।

आसमान के देवताओं ने जब यह देखा तो उन्होंने सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा से कहा, "हे देव! देखिए हनुमान जी की नटखट प्रजा हमारे नक्षत्रों को कितना तंग कर रही है। आज्ञा हो तो हम बंदरों को वहां से भगा देंगे।"

तब ब्रह्मा बोले, "कोई घबराने की बात नहीं है। थोड़ी देर के बाद बंदरों की यह प्रजा अपने-आप थक जाएगी। थोड़ी देर सब्र कीजिए।" ब्रह्मा की बात सुनकर देवता लोग चुप हो गए।

एक दिन शाम को एक बड़े बंदर ने संध्या-नक्षत्र को धड़ाम से मार दिया। बेचारा संध्या-नक्षत्र हक्का-बक्का होकर डर के मारे तुरंत बादलों में छिप गया। इस बार विष्णु स्वयं ब्रह्मा के पास गए और ब्रह्मा से उन्होंने निवेदन किया, "हे सृष्टिकर्त्ता, इन जानवरों से नक्षत्रों की रक्षा कीजिए।"

दयालु ब्रह्मा ने कहा, "अब तो संध्या-नक्षत्र बादलों के अंदर है। बंदर वहां तक नहीं पहुंच पाएंगे, और न ही गड़बड़ कर पाएंगे। सबेरे तक प्रतीक्षा कीजिए, बाद में देखेंगे।"

अगले दिन जब भोर होने लगा, तो भोर का तारा अति सुन्दरता से चमक रहा था। यह देखने के लिए कि बंदर कैसे तारों को तंग करते हैं, उस

दिन प्रातःकाल से ही ब्रह्मा स्वयं आकर आसमान पर उपस्थित हो गए थे। भोर होते ही बंदरों के झुंड के झुंड कोराङ्ग की चोटी पर चढ़ गए और उस मनोहर और कांतिमान भोर के तारे को चारों ओर से घेरकर उस पर हमला करने लगे। तारा भयभीत होकर बादलों में छिप जाना चाहता था, लेकिन कहीं कोई बादल दिखाई नहीं पड़ा तो वह आर्तनाद करने लगा, "हे सृष्टिकर्ता ! बचाओ, बचाओ।"

भोर के तारे की आवाज़ सुनकर छोटे और बड़े सभी नक्षत्र ज़ोर-शोर से चिल्लाने और चीखने लगे तथा ब्रह्मा से प्रार्थना करने लगे, "हे दीनदयालु, हमारी रक्षा करो। ये जानवर हमें इस प्रकार परेशान करते रहेंगे तो हमारा जीना मुश्किल हो जाएगा और हम एक क्षण के लिए भी आसमान पर नहीं रह पाएंगे और प्रकाश न दे पाएंगे।"

ब्रह्मा ने तब बंटम के राजा लूरूघलाम को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम हनुमान जी तुरन्त मेरे पास भेज दो।

हनुमान जी ब्रह्मा के पास पहुंचे तो ब्रह्मा ने उन्हें एक बड़ी कैंची सौंपते हुए कहा, "जाओ पृथ्वी पर, कोराङ्ग पहाड़ का एक तिहाई हिस्सा काट डालो जिससे कि कोई बंदर फिर कभी किसी नक्षत्र को परेशान न कर सके।"

तब हनुमान जी ने पूछा, "हे भगवान ! उस एक तिहाई हिस्से को मैं कहां ले जाऊं ?"

ब्रह्मा ने कहा, "जाओ, पहले उसे काट डालो। बाकी सब अपने-आप ठीक हो जाएगा।"

हनुमान जी कैंची लेकर पृथ्वी पर उतर आए। कोराङ्ग पहाड़ पर चढ़कर उन्होंने बड़ी कैंची से उसका एक तिहाई हिस्सा काट डाला। वह भारी गर्जन के साथ समुद्र में गिर गया। ब्रह्मा की इच्छा के अनुसार उससे वहां अनेक छोटे और बड़े ज्वालामुखी पहाड़ उत्पन्न हो गए।

बादूवी लोग कहते हैं कि अपनी जाति के दुष्ट लोगों को दण्ड देने के लिए ब्रह्मा ने हनुमान के कोराङ्ग पहाड़ के टुकड़े से सुण्डा जल-संधी में इन ज्वालामुखियों का निर्माण किया। इसीलिए पापी लोगों की आत्माएं अग्निदूतों के द्वारा यहां लाई जाती हैं, जहां कि उन्हें तरह-तरह की कठोर यातनाएं भुगतनी पड़ती हैं।

दो चीनी व्यापारी

चीनी लोग भात ज़्यादा खाते हैं। भात में स्वाद लाने के लिए वे चावल के साथ इमली के पत्ते उबाल कर खाते हैं। अगर छोटा-मोटा इमली का पौधा हो तो एक ही आदमी कुछ ही दिनों में उसके सारे पत्ते खा डालता है और वह पौधा ठूंठ बन जाता है। लेकिन इसी इमली के पौधे के ज़रिए एक आदमी ने अपने मित्र को एक ऐसा सबक सिखाया जिसे वह जीवन भर याद रख सका और जीवन को सुखी बनाने के कामों में तल्लीन हो गया। लेकिन वह क्या सबक था? पढ़िए थाईलैंड की प्रसिद्ध लोककथा **'दो चीनी व्यापारी'**।

पुराने ज़माने में चीन के दक्षिणी समुद्र तट पर स्वतोव बंदरगाह के पास दो चीनी व्यापारी रहते थे। उनमें से एक का नाम ङ्यान-ह्याङ्ग था और दूसरे का हा-याङ्ग। वे दोनों पड़ोसी थे, साथ ही बचपन से दिली दोस्त भी। दोनों स्वतोव बंदरगाह के पास छोटी-मोटी चीज़ों का व्यापार करके अपना गुज़ारा करते थे। लेकिन एक दिन भयंकर रूप से आंधी और तूफान आया और उसने स्वतोव बंदरगाह को तहस-नहस कर डाला। इस तूफान से, आसपास के घर-बार नष्ट-भ्रष्ट हो गए और ङ्यान-ह्याङ्ग तथा हा-याङ्ग को भारी क्षति उठानी पड़ी। उनका व्यापार ठप्प हो गया। फिर भी वे निराश नहीं हुए। उन्होंने थाईलैंड जाकर वहां व्यापार करने का निश्चय किया। लेकिन यात्रा के लिए पैसा कहां से लाया जाए? यह समस्या उनको सताने लगी। फिर भी एक सप्ताह के अन्दर बड़ी मेहनत के बाद वे किराए लायक पैसा बटोर पाए।

पैसे लेकर वे थाईलैंड की यात्रा पर निकल पड़े। किराए के पैसों को छोड़ उनके पास कुछ भी नहीं था, सिवाय उन कपड़ों के जो उन्होंने पहन रखे थे। लेकिन उनके पास थे उनके कर्मठ हाथ और साहसिक जीवन बिताने की प्रबल इच्छा। कुछ दिनों तक जहाज़ पर यात्रा करने के बाद वे थाईलैंड की खाड़ी तक पहुंच गए। वहां से मेनम नदी से होते हुए वे थाईलैंड की राजधानी बैंकाक नगर पहुंचे। बैंकाक नगर उस समय भी अपनी प्राकृतिक शोभा के



लिए प्रसिद्ध था। वहां की प्राकृतिक सुन्दरता इन दोनों मित्रों को बहुत भायी। अतः उन्होंने वहीं अपना व्यापार शुरू करने का निश्चय किया।

उन दोनों ने व्यापार करने तथा पैसा कमाने की एक निश्चित योजना बनाई थी। उन्होंने यह तय कर लिया कि वे दोनों मिलकर एक साथ व्यापार नहीं करेंगे। बैंकाक की उत्तरी दिशा में एक, और दूसरा दक्षिणी दिशा में जाएगा। अपनी सुविधा और रुचि के अनुसार वे अलग-अलग वस्तुओं का व्यापार करेंगे। व्यापार वे बड़ी निष्ठा और लगन के साथ करेंगे और खर्च बहुत ही कम करेंगे। जब तक वे पचास चाङ्ग (एक चाङ्ग आठ चांदी के सिक्कों के बराबर होता है) नहीं कमा लेंगे, तब तक एक-दूसरे से नहीं मिलेंगे।

इसके अतिरिक्त उन्होंने कुछ नियम भी बना लिए थे, जैसे; वे हमेशा सादा जीवन बिताएंगे। खूब मेहनत करेंगे, चावल, अचार, नमक और समुद्री मछली खाएंगे। महंगी चीज़ें जैसे; सूअर, बतख अथवा मुर्गी का मांस आदि नहीं खाएंगे। दोनों मित्रों ने इस योजना के अनुसार नियमों का पालन करते रहने का प्रण लिया और वे अपनी-अपनी दिशाओं में व्यापार करने चले गए।

ङ्यान-ह्याङ्ग अपने वचन का पक्का रहा। वह बड़ी मेहनत करने लगा। चावल, शलजम का अचार, नमक और समुद्री मछली खाकर अपना निर्वाह करने लगा। कभी किसी स्वादिष्ट चीज़ की तरफ उसने आंख तक उठाकर नहीं देखा। वह अपने व्यापार में बड़ा ईमानदार और मिलनसार रहा। उसके साधारण जीवन और आकर्षक गुणों को देखकर लोग बहुत प्रभावित हुए। सारा-व्यापार खूब चलने लगा। ङ्यान-ह्याङ्ग ने सब तरफ अच्छा नाम कमाया। नाम के साथ-साथ उसने पैसा भी खूब कमाया। अपनी योजना के अनुसार उसने बहुत जल्दी ही पचास चाङ्ग कमा लिए। फिर भी वह सादा जीवन ही बिताता रहा। जब उसके पास एक सौ चाङ्ग जमा हो गए और वह अपनी कमाई से तथा अपने धंधे से सन्तुष्ट हो गया और जब उसको यह लगा कि उसका व्यापार अब बेरोक-टोक चलता रहेगा तब उसने अपने लिए एक अच्छा मकान बनवाया, फिर घर भी बसा लिया। इसके बाद वह महंगा और स्वादिष्ट भोजन खाने लगा और आराम से तथा आनन्द से जीवन बिताने लग गया।

उसका मित्र जो कि दूसरी तरफ व्यापार करने के लिए गया था उसकी कोई खबर उसे नहीं मिली। उसके बारे में जानने के लिए वह उत्सुक रहता। लेकिन बाद में उसने सोचा कि शायद हा-याङ्ग मुझ से भी बड़ा अमीर हो गया हो और अपने धंधे से उसे फुरसत नहीं मिल रही हो। इस वजह से उसने कोई समाचार नहीं भेजा।

लेकिन वास्तव में बात यह नहीं थी। हा-याङ्ग बैंकाक की दूसरी तरफ आया और व्यापार करने लगा। मेहनत के मुताबिक उसे पैसे मिलते गए। अपने मित्र को उसने जो वचन दिया था उसके अनुसार वह भी शुरू में सादा भोजन चावल, अचार, नमक और समुद्री मछली ही खाता रहा। लेकिन कुछ दिनों के बाद एक ही प्रकार का खाना खाते-खाते उसका जी ऊब गया। वह सोचने लगा कि एक ही तरह का खाना खाना पड़ रहा है, इसमें न कोई स्वाद है और न कोई ताकत। मैं दिनोंदिन दुबला होता जा रहा हूं। उधर मेरा मित्र ङ्यान-ह्याङ्ग अच्छा भोजन खा रहा होगा, उसने मेरे लिए ही ये कठोर नियम बनाए होंगे। फिर उसके मन में यह ख्याल आया कि ठीक है। पैसे की बचत करनी चाहिए, लेकिन रोज़ खाने पर जितना पैसा मैं खर्च कर रहा हूं, यदि उस रकम में कोई बत्तख मिल जाए तो खाने में क्या एतराज़ है। उस दिन से वह बाज़ार में सस्ते दाम पर खरीदने के लिए बत्तख ढूंढ़ने लगा।

एक दिन उसे एक जगह कम दाम पर एक बत्तख मिल ही गई। वह किसी बीमारी से मर गई थी इसलिए वह सस्ते दाम पर बिक रही थी। हा-याङ्ग ने उसे खरीद कर खा लिया। बहुत दिनों के बाद उसने बत्तख का मांस खाया था, इसलिए उसे सड़ा हुआ बत्तख का मांस भी स्वादिष्ट लगा। अगले दिन उसने फिर उसी जगह पर एक मरी हुई बत्तख खरीदी। लेकिन उसे उस दिन उसका स्वाद अच्छा नहीं लगा। इसलिए उसने दूसरे दिन अच्छी और जीवित बत्तख खरीद कर खाई। उसका मांस उसे और अधिक स्वादिष्ट लगा। फिर क्या था, अगले दिन से उसे उसका चस्का लग गया, और वह आगे भी स्वादिष्ट मांस खाए और बगैर अपने-आपको रोक नहीं पाता था। रोज़, बत्तख, मुर्गा और सुअर आदि तरह-तरह का मांस खरीद कर खाता रहा।

जब पेट भर बढ़िया भोजन मिलता जाए, तो यह स्वाभाविक ही है कि

नींद भी अधिक आए और आदमी आलसी भी बन जाए। हा-याङ्ग रोज़ पेट भर खाने लगा और आराम से जीवन बिताने लगा। जितना भी वह रोज़ कमाता, उसे वह खाने-पीने में ही खर्च कर देता। इन कारणों से वह कभी भी पचास चाङ्ग की बचत नहीं कर पाया।

एक दिन उसे अपने मित्र ङ्यान-ह्याङ्ग का हाल जानने की इच्छा हुई, तो वह वहां से बैंकाक के लिए रवाना हुआ। बैंकाक पहुंचने पर उसे यह ज्ञात हुआ कि उसका मित्र वहां एक आलीशान मकान में रहता है। यह जानकर वह चकित हुआ। उसके पास जाकर उसने अपना हाल सुनाया। उस समय मित्र ने उससे कुछ भी नहीं कहा। लेकिन उसकी इच्छा के अनुसार उसे अपने पास ही रख लिया। वह रोज़ उसे चावल, अचार, नमक और समुद्री मछली का ही भोजन देता रहा। कुछ दिनों के बाद वह उस भोजन से ऊब गया और एक दिन अपने मित्र से कहा कि यदि उसकी आज्ञा हो तो वह अपने भोजन के साथ इमली के पत्ते भी उबाल कर खाना चाहता है। मित्र ने उसके अनुरोध को स्वीकार किया और उसे अपने बगीचे के एक इमली के पौधे को दिखाकर कहा कि इस पौधे से पत्ते तोड़कर भात के साथ उबाल कर खाते रहो।

अगले दिन से हा-ह्याङ्ग उस पौधे से पत्ते तोड़ कर भात के साथ उबाल कर खाने लगा। लेकिन कुछ दिनों के बाद उस पौधे से सारे पत्ते खतम हो गए और वह पौधा ठूंठ मात्र रह गया और कुछ दिनों के बाद वह भी सूख गया। फिर हा-याङ्ग ने मित्र के पास जाकर कहा कि उस पौधे के पत्ते खतम हो गए और पौधा भी सूख गया है। तब उसके मित्र ङ्यान-ह्याङ्ग ने कहा कोई बात नहीं, मैं तुम्हारे लिए दूसरा इन्तज़ाम करवा दूंगा, तुम कल मेरे पास आकर इसकी याद दिलाना।

अगले दिन जब हा-याङ्ग उसके पास गया तब उसने उसे अपने बगीचे के एक बड़े इमली के पेड़ को दिखाते हुए कहा इस पेड़ के पत्ते तोड़कर खा लेना। जब इसके भी पत्ते समाप्त हो जाएंगे तब मुझसे कहना, तब मैं तुम्हारे लिए अच्छे भोजन की व्यवस्था करा दूंगा जिसमें मांस और मछलियां आदि होंगे। इस बात से हा-याङ्ग खुश हो गया। उसने यह समझा था कि जल्दी ही इस पेड़ के पत्ते खा डालूंगा और बाद को मुझे अच्छा और स्वादिष्ट भोजन मिला करेगा।

अगले दिन से वह अपने भोजन में ज़्यादा से ज़्यादा इमली के पत्ते इस्तेमाल करने लगा। लेकिन कई महीनों के बाद भी उस पेड़ के पत्ते खतम नहीं हुए। यह देखकर वह बड़ा निराश हुआ। आखिर विवश होकर वह मित्र के पास गया और दीनता से उसने कहा कि मैं रोज़ अधिक से अधिक पत्ते तोड़कर खा रहा हूं, लेकिन इस कम्बख्त पेड़ के पत्ते खतम नहीं हो रहे हैं। जितने पत्ते आज मैं तोड़ लेता हूं दूसरे दिन उतने ही पत्ते इस पेड़ में उग आते हैं। मैं बड़ा परेशान हूं, मुझे कोई दूसरा रास्ता दिखाइए।

हा-ह्याङ्ग की ये बातें सुनकर ङ्यान-ह्याङ्ग हंस पड़ा और अपने मित्र के कंधे पर हाथ रखकर बोला, "यह ऐसा ही होगा, दुनिया की प्रकृति ही ऐसी है। जब तुम्हारी आय छोटे इमली के पौधे के समान छोटी थी, तुम उसे खर्च करते रहे, इस कारण उसकी वृद्धि नहीं हो पाई और अन्त में वह पूरी खतम हो गई। लेकिन मैंने अपने परिश्रम और लगन से छोटे-से इमली के पौधे जैसी अपनी आय को बड़ा किया और उसे बचा-बचा कर एक बड़े इमली के पेड़ के समान विशाल बना दिया। इस कारण अब जितना भी उसमें से खर्च करता रहूं फिर भी उसकी वृद्धि होती रहेगी और वह कभी समाप्त नहीं होगी।

मित्र की ये बातें सुनकर हा-ह्याङ्ग लज्जित हुआ। अपने कार्यों पर उसे रंज भी हुआ। वह तुरन्त अपने मित्र से यह कहकर चला गया कि आपने मुझे अच्छा सबक सिखाया। मैं इस सबक को जीवन भर याद रखूंगा। मैं भी आपके अनुसार कार्य करूंगा। जब तक मेरी भी आय बड़े इमली के पेड़ के समान बड़ी नहीं होगी तब तक मैं अपनी आय से कम खर्च करता रहूंगा और जब उसकी वृद्धि होगी तभी फिर आपको अपना मुंह दिखाऊंगा।

करिपो और कसोमू

प्रशान्त महासागर में आस्ट्रेलिया के उत्तर में एक बड़ा द्वीप है। यह न्यूगिनी कहलाता है। कहते हैं कि कई हज़ार वर्ष पहले वहां कोई बड़ा द्वीप नहीं था। एक नन्हा-सा द्वीप मात्र था। लेकिन 'करिपो' पक्षी और 'कसोमू' सीपी के प्रेम के कारण इस बड़े द्वीप का जन्म हुआ। यहां तक कि उस द्वीप का आकार भी 'करिपो' के समान बन गया। न्यूगिनी द्वीपवासी आज भी करिपो जाति के पक्षियों और कसोमू जाति की सीपियों को बड़ा पवित्र मानते हैं, और 'करिपो और कसोमू' की कहानी बड़े चाव से सुनते हैं।

कई हज़ार वर्ष पहले की बात है। तब प्रशान्त महासागर में न्यूगिनी द्वीप नहीं था। उस समय आस्ट्रेलिया महाद्वीप के उत्तर में एक छोटा-सा द्वीप था। अभी मानव-प्राणी उस द्वीप में नहीं पहुंचे थे। उस छोटे-से द्वीप में तरह-तरह के पेड़-पौधे पशु-पक्षी, मगरमच्छ और तरह-तरह की छोटी-बड़ी सीपियां मात्र थीं। पक्षियों में इन्ड्रोम और करिपो जाति के पक्षी बहुत मशहूर थे और सीपियों में कसोमू।

एक इन्ड्रोम पक्षी ने एक कसोमू से शादी की थी। इन्ड्रोम रोज़ सवेरे जंगल में चला जाता और साबूदाने के पेड़ों से साबूदाना निकाल कर शाम को घर लौटता। कसोमू साबूदाना पका कर इन्ड्रोम को खिलाती। इस प्रकार उन दोनों के प्रारम्भिक दिन बड़ी खुशी में बीत गए।

एक दिन साबूदाना लाने के लिए जंगल जाते हुए इन्ड्रोम ने कसोमू से कहा, "कसोमू! मैं जंगल जा रहा हूं, साबूदाना खिलाओ।" कसोमू ने जवाब दिया, "इन्ड्रोम! आज मेरी तबीयत खराब है, साबूदाना अन्दर रखा हुआ है, तुम खुद परोसकर खा लो।"

इन्ड्रोम साबूदाना खाकर अपने साथ साबूदाने के पेड़ काटने के लिए कुल्हाड़ी, साबूदाने का रस छानने के लिए छलनी और साबूदाना लाने के लिए बोरे लेकर जंगल की तरफ चल पड़ा। शाम तक उसने जंगल में काम किया और जब सूरज डूब गया, तब वह घर पर लौटा। घर लौटते ही उसने कसोमू



से कहा, "लाओ खाना खिलाओ।"

कसोमू सारे बदन में राख पोतकर लेटी हुई थी। कसोमू ने कहा, "मैं बीमार हूं, उठ नहीं सकती हूं।"

इन्ड्रोम ने खुद खाना परोस कर खा लिया। खाना खा कर फिर वह साबूदाना लाने के लिए जंगल चला गया।

जैसे ही इन्ड्रोम जंगल चला गया कसोमू उठ खड़ी हुई। उसने नहा-धोकर बढ़िया-सा 'स्कर्ट पहना और साज श्रृंगार कर लिया। फिर वह पान-सुपारी लेकर समुद्र के किनारे की कच्छ भूमि पर चली गई। उत्साह से उसने करिपो को आवाज़ दी, "ओ करिपो ! आओ, मैं यहां आई हूं। हम दोनों संग-संग खूब खेलेंगे और नाचेंगे। इन्ड्रोम जंगल चला गया, अभी लौटेगा नहीं। आ जा, दौड़कर आ जा।"

थोड़ी देर के बाद करिपो दौड़ता हुआ कसोमू के पास जा पहुंचा। कसोमू ने 'कइलो', 'पेइचा', और 'मवासी' मछलियों को बुलाया, "आ जाओ ! तुम लोग भी आ जाओ। हमारे साथ खेलो।" कसोमू की आवाज़ सुनकर कइलो, पेइचा और मवासी मछलियां वहां पहुंच गईं। करिपो और कसोमू दिल भर कर खेलते और नाचते रहे। कुछ समय के बाद कसोमू ने कहा, "करिपो ! अब इन्ड्रोम के लौटने का समय हो गया हैं। तुम यहां से जल्दी उड़ जाओ। वह तुमको मेरे साथ यहां देखेगा तो तुम्हारी और मेरी खैर नहीं होगी। मैं भी अब यहां से घर जाती हूं।"

करिपो से विदा लेकर कसोमू घर लौट आई। उसने अपने माथे पर कपड़ा बांध लिया। कमर कस कर रस्सी से बांध ली और दोनों कलाइयों पर पलस्तर चढ़ा लिया। बदन पर राख पोतकर वह कमरे में एक कोने में लेट गई।

थोड़ी देर के बाद इन्ड्रोम घर लौटा। उसने कसोमू से पूछा, "अरी, क्यों लेटी हुई है ? तुझे क्या हो गया ? उठो, खाना खा लो और मुझे भी खिलाओ।"

कसोमू ने कहा, "मैं सख्त बीमार हूं। अब मैं उठ नहीं सकती।" बेचारा इन्ड्रोम खुद भी कुछ खाए बगैर सो गया।

सबेरा होते ही इन्ड्रोम उठा और खाना खाकर साबूदाना लाने के लिए जंगल चला गया। इन्ड्रोम के घर के बाहर जाते ही कसोमू ने सारे पलस्तर और कमर पर कसी हुई रस्सी उतार फेंकी। खूब नहा-धोकर उसने अच्छे कपड़े पहन

लिए। खाना खाकर पिछले दिन की तरह पान-सुपारी साथ में लेकर समुद्र के किनारे की कच्छ भूमि पर चली गई।

कच्छ भूमि पर पहुंच कर उसने करिपो को पुकारा, "करिपो ! तुरन्त आ जा, मैं आ गई हूं। इन्ड्रोम जंगल में चला गया है। वह अभी नहीं लौटेगा।"

कसोमू की आवाज़ सुनकर करिपो उड़ता हुआ खुशी-खुशी वहां पहुंच गया। दोनों खुशी-खुशी खेलते-नाचते और गाते रहे। इस खुशी में यह पता न चल पाया कि कितना समय बीत गया है। उधर इन्ड्रोम साबूदाने का एक बड़ा गोला लेकर घर पहुंच गया। लेकिन उसे घर पर कसोमू नहीं मिली। उसने पूरे घर में उसे ढूंढ़ा। उस कमरे में भी देखा जहां कसोमू लेटी हुई थी। लेकिन वहां भी वह उसे नहीं मिली। वह बड़ा परेशान हुआ।

इन्ड्रोम ने कसोमू को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते सारे द्वीप में चक्कर लगाया। आखिर वह कच्छ भूमि पर पहुंच गया। वहां उसने कसोमू को करिपो के साथ खुशी से नाचते-कूदते और गाते देखा। इन्ड्रोम का खून खौल गया। उससे कभी स्वप्न मे भी नहीं सोचा था कि उसकी प्यारी कसोमू उसे छोड़कर दूसरों के साथ खेलेगी। अपनी खुशी में करिपो और कसोमू ने इन्ड्रोम के आने पर ध्यान नहीं दिया। इन्ड्रोम से रहा न गया। उसने वहीं से एक खजूर का बैंत लिया और करिपो पर कस कर वार किया। करिपो की गरदन पर गहरी चोट लगी। वह चीखता-चिल्लाता हुआ वहां से उड़ गया और अंत में दूर जाकर एक जगह पर धम् से गिर गया। चोट इतनी गहरी थी कि उसकी गरदन तो लम्बी हो गई, और साथ ही वह अध-मरा होकर समुद्र में डूब गया। इन्ड्रोम ने कसोमू के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और उसके टुकड़ों को समुद्र में बिखेर दिया।

जहां करिपो गिर गया था वहां कुछ दिनों के बाद करिपो के आकार का एक बड़ा-सा द्वीप उठ खड़ा हुआ और जहां कसोमू के टुकड़े बिखेर दिए थे वहां छोटे-छोटे द्वीप उग आए। वह बड़ा द्वीप ही न्यूगिनी है जो लम्बी गरदन वाले करिपो पक्षी के आकार का है, और उसके पूरब में जो छोटे-छोटे द्वीप हैं वे कसोमू के टुकड़ों से बने हुए हैं।

न्यूगिनी द्वीप के लोक-मानस में आज भी करिपो और कसोमू की यह प्रेम-कहानी बड़े चाव से कही और सुनी जाती है। वे करिपो पक्षियों और कसोमू जाति की सीपियों को बड़े पवित्र मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं।

आसमान के आंसू और पृथ्वी की आहें

बच्चे रोते हैं। वे रोते हुए आंसू भी बहाते हैं। लेकिन मनुष्य ही नहीं बल्कि आसमान भी रोता है और वह भी आंसू बहाता है। इतना ही नहीं, पृथ्वी भी रोती है और आहें भरती है। क्या आप विश्वास करते हैं? आप विश्वास करें या न करें, न्यूज़ीलैंड के लोग विश्वास करते हैं।

न्यूज़ीलैंड की जन-जातियां आसमान को परम-पिता तथा पृथ्वी को जगत-माता मानती हैं। वे आसमान को 'रंगी' और पृथ्वी को 'पापा' कहती हैं। इन जातियों में यह विश्वास प्रचलित है कि सर्व प्रथम विश्व भर में गहन अंधकार छाया हुआ था और माता-पिता अर्थात् पृथ्वी और आसमान एक-दूसरे के पास अलग-बगल में रहते थे। उनके कई बच्चे थे।

पृथ्वी और आसमान के बच्चे सोचते थे कि काश! प्रकाश की किरणें फूट पड़ती और इस गहन गर्त से हम ऊपर उभर आते, और आलोक का अनुभव पाकर असीम आनंद पाते। वे अपने तंग दायरे से परेशान थे। वे सोचने लगे कि आखिर हमें प्रकाश कैसे उपलब्ध हो। क्या माता-पिता को एक-दूसरे से अलग करने से प्रकाश की किरणें फूट पड़ेंगी।

उनमें से एक ने कहा कि माता-पिता में झगड़ा कराया जाए। दूसरे ने कहा कि माता-पिता को एक-दूसरे से दूर-दूर घसीट कर अलग रखा जाए। रंगी और पापा का उद्दंड लड़का 'तने' जो कि वन-देवता है तथा जंगली जीव-जंतुओं का रक्षक भी है, बोला, "नहीं, यह ठीक नहीं है। भला कोई अपने माता-पिता में झगड़ा कराता है? माता-पिता में झगड़ा कराकर पाप का बोझा नहीं ढोना चाहिए। उन्हें अलग-अलग दूर रखा जाए। यही उत्तम मार्ग है। पिता आसमान को माता पृथ्वी से अलग ऊपर दूर फेंक देंगे और माता पृथ्वी को अपने पैरों तले रहने देंगे। ऐसा करने से पिता हमारे ऊपर बहुत दूर अजनबी-सा पड़ा



रहेगा और ममतामयी माता हमारे पास ही पड़ी रहेगी।

सब भाइयों ने तने की सलाह मान ली। लेकिन उनके एक भाई को ज़िसका नाम 'तौहरी' था यह सलाह पसंद नहीं आई। तौहरी वरुण देवता है। इसलिए उसने सोचा यदि माता-पिता को अलग करके पिता आसमान को ऊपर दूर भेज दिया जाए तो उसका काम ठप्प हो जाएगा।

बहुत देर तक भाइयों में आपस में बहस होती रही। आखिर तौहरी ने भी पृथ्वी से आसमान को अलग करने के लिए अपनी राय दे दी।

अपनी योजना के अनुसार एक दिन सब भाई एकत्र हो गए—माता-पिता को अलग करने के लिए वे इस परेशानी में पड़ गए कि माता से पिता को अलग करने का भार कौन संभालेगा ? वे एक-दूसरे के मुंह ताकने लगे।

कुछ देर बाद खाद्य पदार्थों का देवता 'रंगों' जो कि बड़ा लड़का था, मैदान में आया। वह माता-पिता के बीच में खड़ा हो गया और उसने दोनों को अलग-अलग करने के लिए बड़ी कोशिश की। लेकिन वह सफल नहीं हुआ।

बाद में 'तंगरो' जो कि सरीसृपों का देवता था, सामने आया। उसने भी बड़ी देर तक कोशिश की। अपनी सारी ताकत लगाकर उसने सोचा कि वह इस काम में सफल हो जाएगा। फिर भी कोई फायदा नहीं हुआ।

तंगरो के बाद 'होमियो' जो कि तरल पदार्थों का देवता था, माता-पिता के बीच खड़ा हो गया। उसने भी अपनी सारी शक्ति का प्रयोग कर पिता को माता से अलग करने का यत्न किया। लेकिन होमियो भी कामयाब नहीं हो पाया।

तंगरों के बाद युद्ध का देवता 'तु' जिसने माता-पिता में झगड़ा कराने की सलाह दी थी, उद्दंडता से सामने आया। सारी ताकत लगाकर वह भी बड़ी देर तक झूमता रहा। तु भो विफल होकर अपना मुंह लेकर लौट पड़ा।

सब से अन्त में जंगल का देवता 'तने' शांत भाव से खड़ा हो गया। उसने भी दोनों हाथों से ज़ोर लगाकर माता-पिता को अलग करने की कोशिश की। लेकिन वह भी इस कार्य में सफल नहीं रहा। फिर क्षण भर वह मौन रहा। फिर उसने सिर नीचा कर माता के ऊपर सिर टेक दिया और पैर ऊपर करके पिता से उन्हें टिका दिया। पूरी ताकत लगाकर वह अपनी पीठ को सीधा

करने लगा तो पृथ्वी और आसमान ने चीखते-चिल्लाते हुए कहा—तुम क्यों हमें जबरदस्ती अलग कर रहे हो ? अपने माता-पिता को अलग करने का घोर पाप तुम क्यों कर रहे हो ?

लेकिन 'तने' ने उनके चीखने और चिल्लाने पर ध्यान नहीं दिया। पृथ्वी को उसने नीचे सिर से दबा के रखा और पिता को पैरों से ऊपर ढकेलता रहा। तने के इस प्रकार पूरी ताकत लगाकर ढकेलने से आकाश पृथ्वी से अलग बहुत दूर ऊपर हो गया। और इसके फलस्वरूप दुनिया में प्रकाश की किरणें फूट पड़ीं।

जैसे ही आकाश पृथ्वी से अलग होकर बहुत दूर पर टिक गया सारा जग प्रकाश से जगमगाने लगा। आकाश और पृथ्वी की विपुल संतान अब तक जो अंधकार में छिपी हुई थी बाहर प्रकट हो गई।

''तौहरी' जो कि आंधी और तूफान का देवता था और जो कि पहले से भयभीत था, इससे और भी भयभीत हो गया। आसमान के पृथ्वी से दूर चले जाने से वह सोचने लगा कि उसके पृथ्वी पर रहने से कोई काम नहीं बनेगा। इसलिए वह अपने पिता के साथ आसमान पर चला गया। वहीं से वह पृथ्वी पर भीषण झंझावात, काले बादल, धूल भरे भयंकर आंधी और तूफान और भीषण गर्जन भेजता रहता है।

तौहरी के द्वारा भेजी जानेवाली अनगिनत अड़चनों के बावजूद 'रंगी' और 'पापा' की संतानें शीघ्र ही मेहनत करके अपने-आप को सुदृढ़ बना पाईं और चैन से जीवन बिताने लगीं।

'पापा' से 'रंगी' को दूर हुए कई युग बीत गए। इतने युगों के बीत जाने के बाद भी, अब भी आकाश अपनी पत्नी 'पापा' से अलग होने के दुःख को नहीं भूल पाया। अब भी वह रोता-बिलखता रहता है। उसके आंसू ही रोज़ हमको ओस की बूंदों के समान घास पर बिखरे पड़े मिलते हैं।

'पापा' भी अपने पति के विरह में रोती रहती है और आहें भरती रहती है। हम कभी-कभी नीचे से आसमान की तरफ उठता हुआ जो कुहासा देखते हैं, वह वास्तव में पृथ्वी की आहें ही हैं, और कुछ नहीं।

लगे रहो, पूछते रहो और सावधान रहो

लगे रहो, पूछते रहो और सावधान रहो, ये तीन बातें हैं, जिन्हें विद्या समाप्ति पर एक गुरु जी ने अपने आलसी शिष्य को उपदेश के रूप में बताया था। इन तीनों बातों का पालन करने से बर्मा का एक आलसी लड़का आखिरकार माण्डले प्रान्त का राजा तक बन गया था। आप पूछेंगे कि यह कैसे संभव हुआ था ? लीजिए, यह पढ़िए '**लगे रहो, पूछते रहो और सावधान रहो**' बात आपकी समझ में आ जाएगी।

पुराने ज़माने की बात है, बर्मा के एक गांव में एक लड़का रहता था। उसका नाम 'मौङ्ग पौक क्याङ्ग' था। वह बहुत ही आलसी था। उसे उसके माता-पिता ने अध्ययन के लिए गुरुकुल भेज दिया। उस समय गुरुकुल की पढ़ाई दस साल की होती थी। गुरुकुल में रहते हुए उसने दसों वर्ष यों ही बिता दिए। वह अपने आलस्य के कारण एक अक्षर भी सीख नहीं पाया था। जब अध्ययन की अवधि समाप्त हो गई तो शेष विद्यार्थी आनंद से और बड़े उत्साह से गुरु जी की अनुज्ञा लेकर चले गए। लेकिन बेचारा मौङ्ग पौक क्याङ्ग दीनता से एक कोने में खड़ा रह गया।

सब के चले जाने के बाद गुरु जी ने उसे बुलाकर कहा, "बेटा ! मैं जानता हूं कि तुम क्यों दुःखी हो। लेकिन चिंता मत करो। मैं तुमको तीन बातें बताऊंगा। यदि तुम इन बातों का पालन करोगे तो ज़िंदगी में सफलता पाओगे। सुखी रहोगे।"

मौङ्ग पौक क्याङ्ग ने नम्र होकर कहा, "आज्ञा दीजिए गुरुदेव ! आपकी आज्ञा का आजीवन पालन करूंगा।"

गुरु जी ने कहा, "केवल तीन बातें हैं। पहली है, "लगे रहो,' लगे रहोगे तो तुम अपनी मंज़िल पा सकोगे। दूसरी है, 'पूछते रहो,' पूछते रहोगे तो तुम वांछित जानकारी प्राप्त कर सकोगे। तीसरी है, 'सावधान रहो,' सावधान रहोगे तो ज़िंदा रह सकोगे। इन तीनों बातों को याद रखो।" इन तीनों

को ग्रहण करने के उपरांत मौङ्ग पौक क्याङ्ग गुरु जी की आज्ञा लेकर गुरुकुल से बाहर निकल आया।

मौङ्ग पौक क्याङ्ग कभी बचपन में माण्डले नगर के बारे में बहुत सुन चुका था। माण्डले जाने की इच्छा से वह वहां से सीधे ही पैदल निकल पड़ा। उसके हाथ में पैसा-वैसा कुछ नहीं था।। कई दिनों तक कुछ खाए बगैर ही वह पैदल चलता गया, फिर भी वह निराश नहीं हुआ। कई दिन चलने के बाद आखिर वह एक दिन माण्डले नगर पहुंच गया। रास्ते में वह हमेशा गुरु जी का प्रथम उपदेश, 'लगे रहो, लगे रहो,' का स्मरण करता गया था। इसीलिए वह अपनी मंज़िल तक पहुंच पाया।

माण्डले में मज़दूरी कर वह, कई दिनों तक अपना पेट पालता रहा। फिर भी गुरु जी के दूसरे उपदेश के अनुसार उस नगर के बारे में और उसकी विशेषता के बारे में हर किसी से पूछता भी रहा।

निरंतर पूछते रहने से आखिर उसे यह मालूम हो पाया कि उस नगर का शासन एक रानी कर रही है। उस नगर की मंत्रि-परिषद तथा उसकी प्रजा रानी को नहीं चाहती है। प्रजा और मंत्रि-परिषद की भी इच्छा है कि रानी का विबाह हो जाय तथा उसके पति को राज-काज का काम सौंप कर उन्हें अपना राजा बना दिया जाए। वहां के नियम के अनुसार भी राजा वही बन सकता था जो कि रानी के साथ विवाह करना। लेकिन विचित्र बात यह थी कि रानी की शादी भी हुई थी। एक नहीं, तीन-तीन शादियां हुई थीं। लेकिन शादी की रात को ही राजाओं की मृत्यु होती रही। यह सुनकर अब कोई हिम्मत करके आगे नहीं आता था जो रानी के साथ विवाह करे।

अगले दिन मौङ्ग पौक कङ्वा मंत्रि-परिषद के सम्मुख गया और उसने रानी के साथ शादी करने की इच्छा प्रकट की। मंत्री लोग बड़े प्रसन्न हुए। रानी के साथ तुरंत मौङ्ग पौक क्याङ्ग की शादी की व्यवस्था कर दी गई। शादी के बाद उस दिन रात को मौङ्ग पौक क्याङ्ग शयन-गृह में गया। वह अपने साथ केले का एक ठूंठ भी ले गया था और उसने उसे अपनी चारपाई के नीचे छिपा रखा। वह बगैर सोये तब तक जागता रहा जब तक रानी गहरी नींद में नहीं सो गई। रानी के सो जाने के बाद वह अपने बिस्तर से उठ गया

और अपनी जगह पर केले के ठूंठ को रख दिया तथा उसके ऊपर चादर ओढ़ा दी, जिससे यह मालूम हो कि रानी के बगल में उसका पति सो रहा है। इसके बाद वह उस कमरे के एक कोने में जाकर छिप गया। जैसे-जैसे रात बीतती गई वैसे-वैसे उसे वहां रहना मुश्किल होता गया। नींद ज़ोर से आने लगी। आंखें लाल हो गईं। पलकें झपकने लगीं। फिर भी वह जागता रहा और वहीं पर सावधान होकर बैठा रहा। वह गुरु जी का तीसरा उपदेश—'सावधान रहो, सावधान रहो' जपता गया, आखिर तक।

बड़ी देर के बाद उसे एक भयंकर फूंकार सुनाई पड़ी। छत के ऊपर से एक भयंकर नाग महल के स्तम्भ के सहारे नीचे उतर रहा था। वहां से वह रानी के बिस्तर पर गया। रानी की बगल में किसी आदमी को सोते हुए देख गुस्से में उसने फड़फड़ाकर अपने फन को ज़ोर से उस पर दे मारा। बस! क्या हुआ? केले के ठूंठ के तंतुओं में उसके फन के नुकीले दांत अटक गए। वह छुड़ाने के लिए ज़ोर से फुंकारने लगा और पूंछ उठा-उठाकर ठूंठ के ऊपर मारने लगा। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। उसके नुकीले दांत उस ठूंठ में और बुरी तरह फंस गए। इतने में रानी जाग गई। इसी बीच मौङ्ग पौक क्याङ्ग ने पास छिपी हुई कटार से उस नाग पर वार किया और उस भयंकर नाग को मार दिया। नाग के मर जाने पर रानी चिल्लाने लगी। उसने मौङ्ग पौक क्याङ्ग को उस कमरे से बाहर भगा दिया और अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर उसकी कुंडी लगा ली।

मंत्री तथा उस प्रदेश के सभी लोग यह जानकर कि वह भयंकर नाग, जो कि अब तक तीन-तीन राजाओं को खत्म कर चुका था, मारा गया है, उत्साह से नाचने-गाने लगे। लोग राजा मौङ्ग पौक क्याङ्ग की जय बोलने लगे।

लेकिन रानी दुःखी ही रही। वह किसी से बोलती तक न थी। हमेशा शयन-कक्ष में जाकर रोती रहती। मौङ्ग पौक क्याङ्ग जब रानी के पास उसे सान्त्वना देने जाता तो उसे फटकार मिलती। बेचारे को अपना-सा मुंह लेकर वापस आना पड़ता। फिर भी वह लगातार इस प्रयत्न में रहा कि रानी को सुखी बनाए। वह जब भी उसके पास जाता तो उससे यही कहता, "तुम्हारे दुःख



का कारण क्या है ? मुझे बताओ, मैं उसे दूर करूंगा । तुझे सुखी रखने के लिए मैं अपने प्राणों की भी बलि दे सकता हूं ।"

इस प्रकार बार-बार पूछते रहने से रानी भी बहुत ऊब गई । इससे छुटकारा पाने के उद्देश्य से रानी ने आखिर एक दिन मौङ्ग पौक क्याङ्ग से कहा, "मैं एक पहेली दूंगी । यदि तुम उसका सही-सही जबाब दे सकोगे तो मैं तुम्हारे अधीन रहूंगी और तुम्हारी हर आज्ञा को मानूंगी । यदि तुम इसका सही जबाब नहीं दे पाओगे तो तुम्हारा सिर उड़ा दिया जाएगा । यदि तुमको यह शर्त मंज़ूर है तो बोलो ?"

मौङ्ग पौक क्याङ्ग ने जबाब दिया, "मुझे तुम्हारी शर्त मंज़ूर है । लेकिन मुझे दस दिन का समय दिया जाए जिससे कि मैं तुम्हारी पहेली का सही जबाब बता सकूं ।" रानी ने यह मंज़ूर किया और अपनी पहेली सुनाई—

"एक हज़ार सिक्के दिये उसने
प्रियतम के आकार बनाए रखने ।
प्रियतम की अस्थियां गूंथ लीं उसने
बालों की शोभा अपनी बढ़ाने ।।

बेचारा मौङ्ग पौक क्याङ्ग इस पहेली के जबाब के विषय में हर किसी से पूछता रहा, लेकिन कोई इसका जबाब नहीं दे सका । फिर भी वह इसके पीछे लगा रहा और सबसे पूछता ही रहा ।. अवधि के नौ दिन भी समाप्त हो गए । जब एक ही दिन बाकी रह गया था वह शहर के बाहर जाकर इसके जबाब सोचता हुआ एक पेड़ के नीचे बैठ गया ।

उधर मौङ्ग पौक क्याङ्ग के माता-पिता को जब यह समाचार मिला कि उनका लड़का माण्डले का राजा बन गया है, वे उससे मिलने अपने गांव से रवाना हो गए । माण्डले के पास पहुंचने पर वे एक पेड के नीचे बैठ कर खाना खाने लगे । इतने में दो कौए आकर वहां बैठ गए । उन दोनों ने अपने खाने का थोड़ा हिस्सा उन कौओं को डाल दिया । कौओं ने भर पेट खाना खा लिया उनमें से मादा कौए ने कहा, "कल इससे भी बढ़िया खाना मिलेगा ।"

नर कौए ने पूछा, "कैसे ?"

मादा बोली, "अरे तुम जानते नहीं हो ? कल तो अंतिम दिन है, राजा

को रानी की पहेली का जबाब देने का। वह जबाब नहीं दे पाएंगे। शर्त के अनुसार उनका सिर उड़ा दिया जाएगा और उनका मांस कौओं को डाल दिया जाएगा।"

नर कौआ बोला, "अगर वे जवाब दे सकेंगे तो ?"

मादा बोली, "नही जी, वे कभी जवाब नहीं दे सकेंगे। इसका जवाब मेरे और रानी के सिवा कोई नहीं जानता। क्योंकि उस सांप के मारे जाने के बाद मैं वहीं पर थी। मैं आशा कर रही थी कि उस सांप का मांस हमें खाने को मिलेगा लेकिन मिला नहीं। वास्तव में वह नाग, रानी का प्रियतम था। रात को वह रानी के पास आता था और फिर अपना रूप बदल कर रानो के साथ रहता था। सवेरे होते ही फिर सांप बनकर चला जाता था।"

"अपने प्रियतम के आकार को सुरक्षित रखने के लिए रानो ने चमार को एक हज़ार सिक्के दिए और उसने उसके चमड़े के अंदर भूसा भर दिया, और उसके आकार को यथावत बना दिया। फिर रानी ने एक बढ़ई को एक हज़ार सिक्के दिए तथा उस सांप की हड्डियों से उसने अपने 'बालों के पिन' बनवाए, जिन्हें आजकल वह पहनती है।"

कौओं के वार्तालाप सुनते ही तुरंत बाद मौङ्ग पौक क्याङ्ग के माता-पिता वहां से उठ गए और यह खबर अपने लड़के को देने के लिए दौड़ पड़े, रास्ते में ही एकांत में चिंता में बैठे अपने लड़के से उनकी मुलाकात हो गई। उन्होंने सारी बातें, जो कि उन्होंने कौओं से सुनी थी, अपने लड़के से कह दीं। बस, पहेली का सही जवाब मिल गया। अगले दिन सही जवाब देकर मौङ्ग पौक क्याङ्ग ने रानी को अपनी दासी बनाया और वह आराम से राज्य करने लगा।

आदि पुरुष इट्से

मानव जाति का मूल पुरुष कौन था ? इसके उत्तर में कई नाम सुनाई पड़ते हैं। अलग-अलग देशों में रहनेवाले तथा अलग-अलग धर्मों को मानने वालों का विश्वास है कि सबसे पहले उनके यहां मानव जाति के मूल पुरुष का जन्म हुआ था। हिन्द महासागर में अफ्रीका प्राय: द्वीपके दक्षिणपूर्व में स्थित माडागास्कर (मालागासी) द्वीप के लोगों का विश्वास है कि मानव जाति के मूल पुरुष का नाम 'इट्से' था जो कि माडागास्कर में अवतरित हुआ था। इट्से से मानव जाति का जन्म कैसे हुआ, इसका विवरण वहां की एक लोक-कथा से ज्ञात होता है। यह रोचक तथा **'आदि पुरुष इट्से'** यहां दी जा रही है।

मानव के रूप में सर्वप्रथम पृथ्वी पर उत्पन्न हुए व्यक्ति का नाम इट्से था। वह माडागास्कर द्वीप में आनंद से रहता था। वह अकेला था। किसी से न कुछ लेता और न किसी को देता, दिन भर मस्ती में घूमता। जो मिले सो खाना और रात भर आराम से सो जाना, बस यही उसका काम था। उसके सामने मानव की कोई दूसरी आकृति नहीं थी।

वह अपनी खुद की आकृति समुद्र के किनारे स्थित झीलों में देख लेता था और बहुत प्रसन्न होता था। एक दिन उसे अपनी आकृति का प्रति-रूप बनाने की इच्छा हुई थी। उसने एक के बाद एक दस तक मूर्तियां बनाई थीं।

जब दसवीं मूर्ति बन गई तो ईश्वर ने अपनी नौकरानी बुलाकर कहा, "मैं तुम्हारी शादी इट्से से करना चाहता हूं। तुम्हारी क्या राय है ?"

नौकरानी ने कहा, "मुझे कोई एतराज़ नहीं है, जो आप उचित समझें सो कर सकते हैं। लेकिन इट्से अगर मुझ से शादी करना नहीं चाहेगा तो क्या किया जाए ?"

ईश्वर ने कहा, "प्रयत्न करके देखो। देखेंगे कि इट्से क्या करेगा ?"

ईश्वर ने नौकरानी को आठ तूंबियां देते हुए कहा कि तुम ये तूंबियां

अपने साथ लेकर पृथ्वी पर उतर जाओ। पहली तूंबी में सर्दी भरी हुई है। इट्से के पास पहुंच कर तुम इस तूंबी को खोल देना। इट्से गरमी पाने के लिए तुम्हारे पास आ जाएगा।

गरमी के वास्ते अगर वह तुम्हारे पास नहीं आता है तो तुम दूसरी तूंबी खोल देना। इसमें गरमी है। इसे खोलते ही गरमी इट्से के चारों तरफ फैल जाएगी और वह तुम्हारी बांहों की शीतलता प्राप्त करने के लिए तुम्हारे पास आ जाएगा।

थोड़ी देर रुक कर ईश्वर ने कहा कि अगर दूसरी तूंबी भी बेकार हो गई तो तुम तीसरी तूंबी खोल देना। इसमें प्यास भरी है। इट्से प्यास के मारे तुम्हारे पास पानी मांगने के लिए दौड़ पड़ेगा। प्यास को भी यदि वह सहन कर लेता है और तुम्हारे पास तब भी नहीं आता है तो तुम चौथी तूंबी खोल-कर उसके सामने रखना। तुरन्त इट्से भूख से तड़पने लग जाएगा। तुम भी तुरन्त उसे स्वादिष्ट भोजन बनाकर खिलाना। वह तुम से ज़रूर संतुष्ट हो जाएगा और तुम पर मोहित हो जाएगा।

नौकरानी ने ईश्वर से पूछा, "यदि तब भी इट्से पास नहीं आया तो मुझे क्या करना होगा ?"

ईश्वर ने कहा कि मान लो वह तब भी तुम्हारे पास नहीं आए तब तुम इस पांचवीं तूंबी को उसके सामने खोलना। जैसे ही यह तूंबी खुलेगी, झुंड के झुंड मच्छर निकल कर इट्से को काटने लगेंगे। उनसे बचने के लिए वह तुमसे शाल मांगेगा। तुम तुरंत उसे शाल ओढ़ा देना और उसे अपने पास खींच लेना।

इसके बाद ईश्वर ने कहा—"अगर इट्से तुम से शाल नहीं मांगता है और मच्छरों से बच निकलता है तब तुम इस छठी तूंबी को खोल देना। इसमें दुनिया भर की खुजली इकट्ठी की गई है। वह खुजली के मारे तड़पेगा और बिलखेगा। तुम इस डिब्बे में से मलहम ले लेना और इट्से के सारे बदन पर मल देना। वह ठीक हो जाएगा और तुम्हारा दास बन जाएगा।

"अगर वह मलहम नहीं लगाने देता है तो तब तुम ऊब भरी हुई यह सातवीं तूंबी खोलना। जब वह पूरी तरह ऊब जाएगा तब तुम अच्छी और रस भरी कहानियां सुनाकर उसे खुश कर देना। अगर इससे भी वह तुम्हारे वश में

नहीं आता है तब तुम इस अंतिम और आठवीं तूंबी खोल देना।

"इस तूंबी में हंसी ही हंसी भरी हुई है। जैसे ही यह तूंबी खुल जाएगी इसमें से हंसी फूट पड़ेगी। इट्से ने इसके पहले कभी हंसी नहीं सुनी है और उसे पता नहीं है कि कैसे हंसा जाता है। इस कारण वह जैसे ही हंसी सुनेगा तुम्हारे पास उत्सुकता से दौड़ पड़ेगा और हंसी का अनुकरण करने की चेष्टा करेगा। तब तुम उसे हंसने के तरीके सिखा देना और अपने वश में कर लेना।"

ईश्वर से आज्ञा लेकर नौकरानी पृथ्वी पर उतर आई जब वह इट्से के पास पहुंच गई इट्से ने उसे देखकर भी अनदेखा कर दिया।

ईश्वर के आदेश के अनुसार नौकरानी ने पहली तूंबी इट्से के सामने खोल दी। इट्से ने लकड़ियां इकट्ठी कर आग जला ली और सर्दी से अपने आपको बचा लिया।

जब उसके सामने दूसरी तूंबी खोल दी गई, उसने छायादार शीतल पेड़ों के झुरमुट में जाकर गरमी से अपने को बचा लिया।

जब नौकरानी ने तीसरी तूंबी भी खोल दी तो इट्से ने केले के ठूंठ खा कर प्यास बुझा ली।

चौथी तूंबी खोलकर जब वह इट्से के लिए खाना बनाने लगी तब इट्से ने केले खाकर अपनी भूख मिटा ली और उसने बिना किसी उत्सुकता के उसकी तरफ देखा।

जब मच्छरों के झुंड हमला कर उसे काटने लगे तब उसने हाथों से उन्हें दूर-दूर भगा दिया।

जब उसके सारे बदन पर दर्दनाक खुजली मच गई, तब उसने एक पेड़ के तने से अपने तन को खुजला कर खुजली दूर कर ली।

जब ऊब ने उसका पीछा किया तब उसने लकड़ी काटते हुए अपने को व्यस्त रखा और उसने ईश्वर की नौकरानी की कोई कहानी नहीं सुनी।

अंत में जब आठवीं तूंबी से हंसी फूट पड़ी तो इट्से कानों में उंगलियां डालकर आराम से सो गया।

आखिर इट्से से हार कर ईश्वर की नौकरानी स्वर्ग लौट गई। उसने ईश्वर को अपनी सारी कथा बता दी। ईश्वर यह सब सुनकर उस पर कुपित हो



गए और उन्होंने उसे रसोईघर में भेजते हुए कहा, "जाओ तुम रसोई के काम के लायक ही हो, और कोई दूसरा काम तुमसे नहीं होगा।"

ईश्वर परेशानी में पड़ गए। 'इट्से को कैसे वश में किया जाए और उसे कैसे शादी-शुदा बनाया जाए ?' पिता की परेशानी सुनकर ईश्वर की लड़की 'इवोलो' ने कहा, "पिताजी मुझे पृथ्वी पर भेज दीजिए। मैं इट्से को अपने वश में कर लूंगी, और आपकी इच्छा अगर हो, तो मैं उससे शादी भी कर लूंगी।"

ईश्वर की अनुमति पाकर उनकी लड़की एक दिन पृथ्वी पर उतर आई। वह सीधे इट्से के पास गई। इवोलो ने बहुत ही सुन्दर कपड़े पहन रखे थे। वे बहुत ही सुन्दर और कीमती धागों से बुने हुए थे। कपड़ों से सातों रंग—बैंगनी, नीला, हरा, पीला, लाल, नारंगी और गेहुंआ चमक रहे थे। इट्से इवोलो की सुन्दरता तथा उसके कपड़ों को देखकर मोहित हो गया। उसने इवोलो से अपने पास रहने को कहा।

जब से इवोलो पृथ्वी पर आई थी तब से इट्से ने मूर्तियां बनाना बंद कर दिया। रात-दिन उसके पास रहता, चौबीस घंटे इवोलो को निहारता रहता। इसी प्रकार कई वर्ष बीत गए। एक दिन इवोलो ने कहा, "इट्से, मैं यहां ऊब गई हूं। मैं आपकी बनाई गई मूर्तियों से खेलना चाहती हूं लेकिन इनमें जान नहीं है। मैं अपने घर जा रही हूं। वहां से लौटते समय इनके लिए प्राण ले आऊंगी।"

इवोलो के स्वर्ग जाने के बाद पृथ्वी पर अंधकार छा गया। मूसलाधार वर्षा होने लगी।

फिर इवोलो कुछ दिनों के बाद पृथ्वी पर लौट आई। अपने साथ वह एक तूंबी में प्राण और सूरज की किरण ले आई। इट्से द्वारा बनाई गई मूर्तियों में जान भर कर उन्हें उसने जीवित कर दिया था। ये इट्से और इवोलो के बच्चे कहलाने लगे। आज इनकी संतान से ही मानव जाति की उत्पत्ति हुई।

आज भी माडागास्कर के लोग छींकते समय 'इट्से' कहकर अपने मूल पुरुष इट्से को याद करते हैं।

मिनाइग काबू

सुमात्रा में मकानों की छतें सपाट नहीं होती हैं। वे गोलाकार या गुम्बदाकार भी नहीं होती हैं। लेकिन वहां हरेक मकान की छत कटड़े के सींगों के आकार की होती है। इतना ही नहीं सुमात्रा के लोग गर्व के साथ अपने प्रदेश को 'मिनाइग काबू' अर्थात् वह प्रदेश जहां के कटड़े की जीत हुई है कहते हैं।

पुराने ज़माने में जावा में एक पराक्रमी राजा राज्य करता था। उसके पास बड़ी फौज थी और तरह-तरह की युद्ध सामग्री भी। अपनी फौज के बल पर उसने इंडोनेशिया के सारे द्वीपों पर हमला कर उनको अपने वश में कर लिया था। लेकिन सुमात्रा द्वीप का पश्चिमी इलाका जो कि भारत के निकोबार द्वीप से थोड़ी दूर पर है, अभी बाकी रह गया था। राजा ने सोचा उस छोटे-से इलाके को कब्ज़े में करने के लिए क्यों बेकार युद्ध किया जाए !

उसने अपने दूत को आज्ञा दी, "जाओ पश्चिमी सुमात्रा, और वहां की जनता से कहो कि तुम लोग भी हमारे राजा के शासन को स्वीकार करो, अन्यथा युद्ध में कुचल दिए जाओगे।"

दूत वहां चला गया। उसने राजा की आज्ञा सुनाई। राजा की आज्ञा सुनने के बाद वहां की जनता ने दूत के द्वारा राजा के पास यह प्रार्थना भिजवा दी कि हमें सोचने के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाए। राजा ने उनको एक सप्ताह का समय दे दिया।

समय तो मिल गया सोचने के लिए, लेकिन वहां की जनता संकट में पड़ गई। सबके मुंह पर एक ही प्रश्न था—क्या किया जाए ? इस मुसीबत से कैसे छुटकारा पाया जाए ?

अगले दिन उस इलाके के औरत-मर्द, छोटे-बड़े सब लोगों ने मिलकर इस गंभीर विषय पर सोचने के लिए एक सभा बुलाई।

सभा में एक ने कहा, "यदि हम राजा के शासन को स्वीकारेंगे तो वह हमें गुलाम बनाएगा, हमारे खेतों पर कब्ज़ा करेगा। तब जीना मुश्किल हो जाएगा।"

"तो क्या किया जाए ?" लोग एक-दूसरे से पूछने लगे।

"शारीरिक ताकत हम में कम है तो क्या हुआ ? पशु-बल से क्या होता है ? यदि हम में मनोबल हो तो हम राजा से कैसे नहीं जीत सकेंगे ?" एक बूढ़े की आवाज़ सुनाई पड़ी । सबके सब उसकी ओर देखने लगे ।

सभा में से एक साथ कई स्वर सुनाई पड़े, "हम सब आपके साथ हैं । आप ही कोई उपाय सोचिए और हम सब को इस मुसीबत से मुक्त कराइए ।"

थोड़ी देर तक बूढ़ा चुप रहा । सभा में कुछ क्षणों तक खामोशी छाई रही । खामोशी को चीरते हुए बूढ़े ने कहा, "हां, उपाय मैंने सोचा है ।"

सब ने पूछा, "क्या ?"

बूढ़े ने कहा, "हम राजा के पास यह कहला भेजेंगे कि युद्ध करने से दोनों ओर के आदमी मारे जाएंगे । युद्ध की जगह भैंसा लड़ाएंगे । मैदान में हम अपनी ओर से एक भैंसा छोड़ेंगे और राजा अपनी ओर से एक भैंसा छोड़ेंगे । दोनों की लड़ाई होगी । लड़ाई में यदि हमारा भैंसा मारा गया तो हम राजा की हुकूमत स्वीकार करेंगे, और यदि राजा का भैंसा मारा गया तो हम हमेशा-हमेशा के लिए आज़ाद रहेंगे । राजा को फिर कभी हम पर हमला करने का कोई अधिकार नहीं होगा ।"

किसी ने पूछा, "अगर हमारा भैंसा मारा गया तो !"

"हमारा भैंसा जीत जाएगा । यह मेरे ऊपर छोड़ो । मैं बाकी सब देख लूंगा । आप लोग राजा के पास यह संदेश भिजवा दीजिए ।" बूढ़े ने उत्तर दिया ।

राजा को जब यह संदेश मिला तो उसने सोचा, 'मैं भी युद्ध करते-करते बहुत थक गया हूं । हां, युद्ध में जान-माल का भी नुकसान होता है । चलो यह एक आसान तरीका मिल गया । सुमात्रा के उस छोटे-से इलाके को छोड़, सारा इंडोनेशिया मेरे कब्ज़े में है । सब जगह से ढुंढ़वाकर मैं बड़े से बड़ा और शक्तिशाली भैंसा मगाऊंगा । सुमात्रा के लोगों को अपने छोटे से इलाके में इतना बड़ा भैंसा कहां से मिल पाएगा ? जीत तो मेरी ही होगी ।' फिर राजा ने सुमात्रा के लोगों की शर्त को स्वीकार कर लिया और दूत के द्वारा अपनी सम्मति कहला भेजी ।

भैंसों की लड़ाई की तारीख तय हो गई ।

लड़ाई की तारीख से दो दिन पहले बूढ़े ने एक भैंस के कटड़े को ले लिया और उसे खाने-पीने को कुछ दिए बिना दो दिन तक अलग बांधकर रखा



बेचारा कटड़ा भूख और प्यास के मारे तड़पता रहा। जब लड़ाई का समय आ गया तब उस कटड़े के छोटे सींगों के ऊपर ज़हर में सने लोहे के नोंकदार सींग पहना दिए गए और उसे मैदान में लाकर एक तरफ खड़ा कर दिया।

उधर दूसरी ओर मैदान में राजा का भैंसा भी लाया गया। वह इतना बड़ा था कि दूर से देखने से हाथी जैसा लग रहा था। वह मैदान में सिर नीचा किए और नथुनों की हवा आग-सी फूंकता हुआ खड़ा हो गया और प्रतिद्वन्द्वी की प्रतीक्षा करने लगा।

सुमात्रा वालों के कटड़े को देखकर जावा का राजा और उसके सेवक लोग हंसने लगे। राजा ने कहा, "हम, जितना मूर्ख इन लोगों को समझते थे, ये उससे भी अधिक मूर्ख निकले।"

लड़ाई का समय हो गया तो सीटी बजा दी गई।

राजा का भैंसा पृथ्वी को खुरचता हुआ हुंकार भरने की प्रतीक्षा कर रहा था। लेकिन न कोई दूसरी हुंकार सुनाई पड़ी और न कोई दूसरा भैंसा ही।

सुमात्रा वालों के कटड़े ने सामने दूर पर खड़े बड़े भैंसे को देखा तो उसने सोचा कि वह उसकी मां है। भूखा-प्यासा कटड़ा उस भैंसे के पास दौड़ पड़ा। पास में पहुंचते ही उसके नीचे जाकर थनों के स्थान पर दूध पीने के लिए अपना मुंह ज़ोर से ऊपर उठाया तो उसके नोंकदार सींग राजा के भैंसे के पेट में चुभ गए और वह वहां धम से गिर गया।

सुमात्रा के लोग खुशी के साथ अपने कटड़े की जयजयकार करने लगे।

राजा अपना-सा मुंह लेकर जावा लौट गया। फिर कभी उसने सुमात्रा पर हमला नहीं किया। सुमात्रा के लोग तब से निश्चिंत होकर आज़ादी से जीने लगे।

राजा के लौट जाने के बाद सुमात्रा के लोगों ने उस कटड़े के सींगों पर से लोहे के सींगों को उतार दिया और उसको मां के पास ले गए। दूध पिलाकर उसे फूलों की माला पहनाई और सारे इलाके में उसका जुलूस निकाला।

उस कटड़े की याद में अपने मकानों की छतों को वे उसके सींग के आकार की बनाने लगे और आज तक यह परंपरा चलती आ रही है। अब भी वहां के लोग गर्व के साथ अपने प्रदेश को 'मिनाङग काबू' अर्थात् वह धरती जहां के कटड़े की जीत हो गई थी, के नाम से पुकारते हैं। □□□

मुद्रक : सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-53

18103

संसार की लोककथाएं

संसार के प्रत्येक देश की अपनी लोक संस्कृति होती है जो अभिव्यक्ति के अन्य रूपों के साथ, वहां की लोककथाओं में विशेष रूप से व्यक्त होती है। इन लोककथाओं में वहां की अपनी परम्पराएं, जीवन-यापन के ढंग तथा विशिष्ट विचार अभिव्यक्ति पाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक माला में इन लोककथाओं को, उन देशों तथा संस्कृतियों के जानकार विद्वान लेखकों ने, भारत के हिन्दी भाषी पाठकों के लिए सरल भाषा में लिखा है—और श्रेष्ठ चित्रकारों ने उन देशों की कला परम्पराओं के अनुरूप इन कथाओं का चित्रण किया है।

मारिशस की लोककथाए	प्रह्लाद रामशरण
तिब्बत की लोककथाएं	डॉ० नन्दकिशोर
पड़ोसी देशों की लोककथाएं	विजय राघव रेड्डी
जापान की लोककथाएं	रमेश बक्षी
इण्डोनेशिया की लोककथाएं	वीरेन्द्रकुमार गुप्त
बर्मा की लोककथाएं	योगराज थानी
नेपाल की लोककथाएं	कमला सांकृत्यायन
अफ्रीका की लोककथाएं	रमेश बक्षी

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली